युवाओं के आशियाने की उलझन

अंकिता मिश्रा
भारतीय सेना की जवान

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Ankita Mishra 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7310-837-7

Cover design: Daksh
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: December 2025

समर्पित है ---

राष्ट्र के युवा पीढ़ी को जो देश
के वर्तमान के आधार स्तंभ है।
ये रचनाएं मेरे गुरु श्री अशोक
गिरि उर्फ बब्लू गिरि की प्रेरणा
की उपज है।

"काव्य संग्रह"

कवि के मन की बात

“युवा देश का आधार स्तंभ है” यह वाक्य तो प्रत्येक दूसरे व्यक्ति की जिव्हा की बात है, क्योंकि सच्चाई भी यही है कल युवाओं के 80% भाग राष्ट्र के रीति रिवाज तौर तरीके को भूलकर बिना किसी उत्तम विचार के जीवन व्यतीत कर रहा है। चलिए थोड़ा सा युवाओं की तरफदारी भी कर ले की वह युवाओं का 80% भाग जिनकी चर्चा उपरोक्त में हमने की है, वह इतना कमा रहे हैं की उनका गुजारा हो जाए, तो एक पल के लिए जरा सोचिए की ऐसे विचार के साथ हम कल्पना भी कैसे कर सकते हैं कि हमारा राष्ट्र प्रगति करेगा उसका भविष्य सुनहरा होगा, बहुत जल्द हमारा राष्ट्र विकसित राष्ट्र बन जाएगा इत्यादि, इत्यादि। पहले जो चर्चा 80% की हुई है यदि वह आंकड़ा 20% का होता तो कितनी उत्कृष्टता की बात होती और मैंने जो इस पुस्तक के अंदर काव्य रूप में लिखा है उसके स्थान पर किसी अन्य विषय पर सुनहरे अक्षर की कविताएं सजी होती।

चूंकि मैं एक युवा हूं इसलिए पता है कि एक युवा के आशियाने की क्या समस्या है, क्या उलझन है, क्या वह चीज है जो हमारे पर को पीछे खींच देता है और एक बार पैर पीछे खींच जाने के बाद वह कौन सा व्यवधान आता है जो युवाओं के मार्ग का अड़चन बनता है एवं इन अड़चन से लड़ने के लिए सबसे महत्वपूर्ण होता है मानसिक नैतिकता का उच्च स्तर हो तथा आत्मविश्वास अविचल हो इसके लिए फौज में अंग्रेजी के एक शब्द का इस्तेमाल किया जाता है जिसे कहते हैं ‘ moral up’ रखना , तो आपकी ‘ moral up’ रखने व सही मार्ग दिखानी हेतु मैंने अपने

स्वरचित काव्य को आपके समक्ष रखा है साथ ही भाव रूपी शब्दों से आपसे संपर्क साधने का कविताओं के माध्यम से प्रयास किया है

इस पुस्तक का एक विशेष उद्देश्य यह भी है कि युवाओं की जो नई पीढ़ी तैयार हो रही है अर्थात वर्तमान के नन्हे नौनिहाल जो कुछ 5 वर्षों में युवा रूप में होंगे। उनके लिए वर्तमान के युवाओं से अनुरोध है की आप ऐसा आगामी भविष्य के समक्ष पेश करें जो उनका पथ प्रदर्शक बने क्योंकि आपकी कीर्ति ही उन्हें उत्तम पाठ प्रदान करेगी या आपके भद्र व्यवहार उनके भविष्य को गड्ढे में धकेल देगी।

उपरोक्त उद्देश्यों व समाज की मांग को ध्यान में रखते हुए इस ‘ पुस्तक ‘ युवाओं की आशियाने की उलझन’ में मैंने कुल 35 कविताओं का संग्रह किया है जो वर्ग आठवीं से चल रही मेरे नित्य प्रयास का प्रतिफल है। वर्तमान में भारतीय सेना में सेवारत रहते हुए भी काव्य संग्रह में नई रचनाएं जोड़ने का क्रम आज भी जारी है।

काव्य रचना में मुझे मेरे गुरु श्री अशोक कुमार गिरि तथा समस्त शिक्षकों का सहयोग मिला है जिससे काव्य रचना में मैं उत्कृष्ट होते गई इसके लिए मैं आप सभी की आभारी हूं तथा आशा करती हूं सभी आगामी रचनाकारों को भी उत्प्रेरक सानिध्य प्राप्त होगा।

धन्यवाद

विनीत

अंकिता मिश्रा

भारतीय सेवा की जवान

मेरी वर्दी ,मेरी पहचान

मेरी जीत – जीत तू ,

मेरी आखिरी प्रीत तू ,

मेरी पहचान तू ,

मेरी अरमान तू

मेरी ख्वाहिशों की दुनिया का सबसे बड़ा दुकान तू,

मेरे ख्वाबों की समंदर का पहला पायदान तू

मेरी इच्छा तू,

मेरी परीक्षा तू,

तुझ पर बलिहार जाऊं ऐसी कृष्ण तृष्णा तू ,

मेरी कृष्णा तू ,

मेरी श्यामा तू,

मुझमें बजने वाली हर धुन का गाना तू,

मातृभूमि से साक्षात भेंट कर पाने का ठिकाना तू,

मेरी आश तू ,

मेरा विश्वास तू,

जीवन जीने का नया अंदाज तू ,

मेरे मन के अथाह समुद्र की

शांति तू, विश्रांति तू ,

मेरी वर्दी तू ही मेरा गौरव, पहचान

और अभिमान भी तू।।

युवाओं के आशियाने की उलझन

कविता वह सुरंग है
जिसके भीतर से मनुष्य
एक विश्व को छोड़कर
दूसरे विश्व में प्रवेश करता है.

— रामधारी सिंह 'दिनकर'

अनुक्रमणिका

1. हम भारत के है 1

2. उठो कब तक सोओगे 3

3.तुमसे ही देश होता है.. 5

4.युवा : नया अवतार.. 7

5.स्थायित्व का अर्थ 8

6.युवा: उठ खड़ा हो 9

7.राष्ट्र समाज का कार्य.. 11

8. प्रत्येक दिन जीवन का आखिरी है 13

9. कर्म से प्यार 15

10. हमारा मुकाम 16

11. उड़ान भरने दो हमें 17

12. चलो गगन के तारे चुने.. 19

13. चल उठ विजय टंकार भर.. 21

14. युवाओं: से सवाल.. 23

15. युवा: कुछ खोया, कुछ पाया है 25

16. युवा:प्रेमी युगलों का जाल.. 27

17.जीवन के युवावस्था का सांझ.. 29

18. खुद को खोकर, खुद को पाया 31

19. जीवन की अलबेली रूपरेखा 33

20.शायद इसी का नाम जीवन है 34

21 सिर्फ हमारे शब्द बचेंगे 36

22. युवा: यह थकने कि तुम्हारी अवस्था नहीं............................ 38

23. युवा: तेरी शक्ति अथाह.. 40

24. आगे बढ़ते जाना है.. 42

25. शिक्षा.. 43

26.मेरा नाज, मेरा वतन 45

27.फिर तू देख, मिल जाए रब.. 47

28. मानव का झूठा भ्रम... 49

29. समय का पहिया चलता जाता है....................................... 51

30. जैसे कर्म वैसे कर्मफल 53

31.खुदरत की चाल.. 55

32. लोहा लो संघर्ष करो 56

33.जिंदगी के सफर में 58

34.चलो आज नई शुरुआत करें 60

35.चलो भारत का नवनिर्माण करें.. 61

1. हम भारत के है

हम भारत के है,
हम भारत के लिए हैं।
हम एक हैं,
पर एक जैसे नहीं है।
हम एक ही सीमा के अंदर है ,
परंतु विषमताओं से भरे।
हम एक ही ध्वज के तले हैं,
परंतु विभिन्न सभ्यताओं में पले हैं।
सबके गीत के हैं अलग धून,
सह परिधान भी है भिन्न।
भाषा में अनेकता है,
परंतु दिल में सबके एकता है।
सब कहते हैं एक ही अन्न,
परंतु स्वाद है बहुरंग।
सब मिलजुल कर मनाते हैं पर्व,
परंतु मनाने के अलग-अलग है सर्ग।
सभी अपनी धून बजाते है,
परंतु बात आए जहां राष्ट्र की
वहां एक ही धून गुनगुनाते हैं।
एक साथ खड़े होते हैं,

बाधाओं से एक साथ लड़ते हैं ,

डटकर राष्ट्र का गौरव बढ़ाते हैं ।

अपना कर्तव्य निभाते हैं,

तभी तो हम भारत के है,

भारत के लिए हैं।।

2. उठो कब तक सोओगे

उठो कब तक सोओगे,
दिखता नहीं सूरज निकल गया,
बीत गया बचपन का दिन,
वो जवाना बदल गया।
उठो कब तक सोओगे,
दिखता नहीं सूरज निकल गया।।
आ गई है जवानी खून में,
रक्त कर्ण है संघर्ष के आतुर ,
शरीर अब गठीला है,
न कोई अंग लचीला है।
अब ना तुम बच्चे हो, ना बूढ़े
युवा तुम्हारी अवस्था है,
अंग अंग में ऐसा बाहुबल
की हर बाधा विघ्नों से लड़ने की व्यस्था है
उठो कब तक सोओगे,
दिखता नहीं सूरज निकल गया।।
आश्रित होने के दिन बीत गए,
जिम्मेदारियां उठाने की बारी है।
वर्तमान हो आप इस राष्ट्र के,
देश चलाने कि अब आपकी पारी है।

आगे बढ़ो अपनी जिम्मेदारी लो,
चलो अपना राष्ट्र सजाने,
एक एक ऐसी व्यवस्था करो,
जो न हुआ हो किसी जमाने।
अनूठा ऐसा कार्य करो कि ,
सर्वश्रेष्ठ बने आपका राष्ट्र।
सहस्त्र वर्षों तक जीवित रहे,
हमारे आर्यावर्त का इतिहास।
उठो कब तक सोओगे,
दिखता नहीं सूरज निकल गया।
बीत गए बचपन का दिन,
वो जवाना बदल गया।।

3.तुमसे ही देश होता है

“छोड़ दो क्या होता है “
ऐसा मत सोचो दोस्त।
तुम्हारे सोचने से ही
देश का सपना सजता है
तुम्हारे कदम बढ़ाने से,
देश आगे बढ़ता है।
तुम्हारी आत्मविश्वास से ही
देश दंभ भरता है।
तुम्हारे व्यवहार से ही ,
देश की छवि बनती है।
तुम्हारे नए मुकाम बनाने से,
देश विश्व मंच पर इठलता है।
अपना धाक जमता है।
तुम कर्म करते हो,
देश आगे बढ़ता है।
राष्ट्र की कल्पनाएं,
तुमसे ही साकार होता है।
तुम्हारी आंखों से,
देश अपना भविष्य देखता है।
तुम्हारे होने से ही

भारत मां का आंचल भारत सा है।
तुम्हें खोने से,
तुम्हारा पालन करने वाला देश डरता है।
“छोड़ दो क्या होता है,”
ऐसा मत सोचो दोस्त।
तुम्हारे होने से देश खुश रहता है,
समृद्ध बनता है,
तुम्हें कर्म पथ पर देखकर देश गर्व करता है।

4.युवा : नया अवतार

श्रृंगार गया,
अब वह व्यवहार गया,
बच्चों सा प्यार देने वाला
अब वह संसार गया।
गुजर गया दिन ,
बिसर गया मन,
अब पाया नया तन,
नया मन,नया नवजीवन।
एक नया अवतार पाया,
जिसमें गंभीरता का संसार समाया।
उसमें जवानी का रंग लुभाया।
नए अवसरों का भंडार है यहां,
कर्मों का बाहर है यहां,
चलो उठाएं अपना भार,
करें इस धरा का अद्भुत श्रंगार।
इस धरती को हम सजाएंगे,
इसे अपना स्वर्ग बनाएंगे,
खुशियों का दीप जलाएंगे,
और बस प्यार ही प्यार लुटाएंगे।

5.स्थायित्व का अर्थ

जो नित्य नहीं, अनित्य है।
उसके लिए इतना क्यों विचार करूं?
जो क्षणभंगुर होने वाला है,
उसके लिए दशकों क्यों बेकार करूं?
जो पल भर में मिट जाने वाला है,
उसके लिए मनोदशा क्यों खराब करूं?
जो मन में बसने वाला है,
उसे बाहर क्यों ढूंढू?
जो सपने सजे हैं,
उसे क्यों तोडू?
इस जगत से मेरा नाता है,
फिर मुंह क्यों मोड़ू?
इससे अच्छा है,
जीवन की सुंदर चित्र में,
अद्वितीय रंग बिखेरू।
नभ के खुले आसमान में उड़ू,
और सफलता के तारे चुनु।।

6.युवा: उठ खड़ा हो

उठ खड़ा हो लंबी सांस भर,
फिर से तू प्रयास कर।
कर कर और किए जा,
क्षमताओं के अंतिम पार तक।
वही मिलेगा मंजिल का सुराग,
जहां धधकती होगी आग,
तप के तू कुंदन बन।
उठ खड़ा हो लंबी सांस भर,
फिर से तू प्रयास कर।।
कोई ऐसा रण नहीं,
जहां तू टिक सकता नहीं,
कोई ऐसा रणबाकुर नहीं,
जो तुम्हें पछाड़ दे कहीं।
फिर तू क्यों हताश है?
ऐसे क्यों निराश हैं?
तो उठ,
उठ खड़ा हो लंबी सांस भर,
फिर से तू प्रयास कर।।
फिर मंजिल तेरे कदमों तक
खुद ही चलकर आएगी।

कामयाबी अपनी वरमाला,
तुम्हारे गले पहनाएगी।
सफलता तुझे अपनायेगी,
खुशियां तेरी गली सजाएगी।
तो उठ,
उठ खड़ा हो लंबी सांस भर,
फिर से तू प्रयास कर,
कर कर और किए जा,
क्षमताओं के अंतिम पार तक।
उठ खड़ा हो लंबी सांस भर।।

7.राष्ट्र समाज का कार्य

चाह नहीं ज्यादा बड़ा करने का
छोटा ही करना चाहती हूं।
भला हो जिसमे राष्ट्र समाज का
कुछ ऐसा करना चाहती हूं।
समस्त भोगों की पान करने की
नहीं मेरी इच्छा है,
करोड़ों की आय करने की
नहीं मेरी लालसा है,
देश के प्रथम नागरिक बनने की
नहीं तो मेरी मनसा है,
क्योंकि मैं सिर्फ इतना करना चाहती हूं,
भला हो जिसमे राष्ट्र समाज का
कुछ ऐसा करना चाहती हूं।
हमें हमारे मनसूबों को
करना है कामयाब।
क्योंकि हमें हमारे राष्ट्र को
बनाना है नायाब।
जिससे कि इतिहास करें,
जरा हमें भी याद।
क्योंकि मैं इतना करना चाहती हूं,

भला हो जिसमे राष्ट्र समाज का
कुछ ऐसा करना चाहती हूं।
ऐसा लगता है भारत मां
हमसे हो यह कह रही,
निष्ठापूर्वक कर्तव्य करो,
उम्मीद तुमसे है यही।
बस इन्हीं उम्मीदों पर खरा उतरना चाहती हूं,
भला हो जिसमे राष्ट्र समाज का
कुछ ऐसा करना चाहती हूं।।

8. प्रत्येक दिन जीवन का आखिरी है

हर दिन आखिरी है जीवन का
यादगार इसे बना लो।
अमर हो जाए यह दिन आपके साथ
कुछ ऐसा कर डालो।
हर दिन सुबह की शुरुआत के साथ
यही उम्मीद ले आता है,
सार्थक उपयोग करो हमारा
यह हमें बतलाता है।
प्रकाशमान हो दिन हमारा
इसलिए सूरज को भी ले आता है,
ऊर्जा से हम परिपूर्ण रहे
इसलिए ऊर्जावान बनाता है।
उपयोग किए बिना ही
ऐसे ना इसे बिता लो।
हर दिन जीवन का आखिरी है ,
यादगार इसे बना लो।
अमर हो जाए यह दिन आपके साथ
कुछ ऐसा कर डालो।
यादों के सहारे ना बिताओ यह नया दिन,
बल्कि कुछ नया कर डालो।

जिससे याद किया जाए,
इस नए दिन को इतिहास में
कुछ ऐसा कर डालो।
उज्ज्वल हो जाए ये दिन आपका
इसलिए अनूठा कार्य कर डालो।
हर दिन जीवन का आखिरी है,
यादगार इसे बना लो।
जीवन के दिन निश्चित है,
पर नहीं पता कौन आखिरी है
इसलिए हर दिन संघर्ष से सजा लो।
हर दिन जीवन का आखिरी है,
यादगार इसे बना लो।
अमर हो जाए यह दिन आपके साथ,
कुछ ऐसा कर डालो।।

9. कर्म से प्यार

तू प्यार कर अपने कर्म से,
किस्मत तुझे प्यार करेगी।
तू जो चाहेगा वह होगा,
सफलता तेरे कदम चूमेगी।
कृति तेरा सौंदर्य बढ़ाएगी,
यश तेरा जगत में होगा।
संघर्ष तेरे गहने होंगे,
परेशानिया तुझे सहने होंगे।
क्योंकि मोती पाने हेतु
डुबकियां लगाने पड़ते हैं।
कष्ट सहने पड़ते हैं,
स्वयं दीपक जलाने होते है।
आचरण से तू वीर बन,
धीर बन, गंभीर बन,
अपने कर्म को सर्वप्रथम
चाहने वाला कर्मवीर बन।
इसलिए
तू प्यार कर अपने कर्म से,
किस्मत तुझे प्यार करेगी।
तू जो चाहेगा वही होगा,
सफलता तेरे कदम चूमेगी।।

10. हमारा मुकाम

राहों में कुछ पल का आराम,
दे देता है और थकान,
इसलिए सोचा है,
अब वही रुकेंगे,
जहां है हमारा मुकाम।।
भले ही दर्द सहेंगे,
पर मुश्किलों में डट कर रहेंगे।
जैसे कलिंग युद्ध में डटे रहे,
चार वर्षों तक अशोक महान।
प्रण अवश्य पूर्ण होंगे हमारे
कर्मफल होगा इसका इनाम।
इसलिए सोचा है,
अब वही रखेंगे,
जहां है हमारा मुकाम।।
राहों में कुछ पल का आराम,
दे देता है और थकान।।

11. उड़ान भरने दो हमें

चांद के उस पर जाने की
हमारी भी तमन्ना है,
देखना है कि उसे पार का जीवन
कितना सहज अफसाना है।
सुनो ,खोल दो ना यह बेड़ियां,
जो है समाज की सीमा की कड़ियां।
हम असीमित उड़ान भरने वाले हैं,
सीमा में हमें ना बांधो,
चोटिल हो जाएंगे पंख हमारे,
टूट जाएंगे आत्मविश्वास की लड़ियां।
छोड़ दो अब जाने दो,
क्योंकि हमारी भी तमन्ना है,
देखना है कि चांद के पार का
जीवन कितना सहज अफसाना है।
हम गुणों के धनी हैं,
करतब दिखाना चाहते हैं।
दुनिया के रंगमंच पर
संघर्षों में पलना चाहते हैं,
संघर्षों से अछूत हो यूं ही
नहीं मरना चाहते है।

अब छोड़ दो ना जाने भी दो,
क्योंकि हमारी भी तमन्ना है।
देखना है चांद के पार का जीवन,
कितना सहज अफसाना है।
समय हमारा कीमती है,
कृपा कर इसे बचा लो,
इस झूठी दुनियादारी में
हमें ना खांगलो।
निश्चित समय पर जन्म हुआ,
मरण तिथि भी निश्चित है।
परंतु यह नहीं पता कि
दुनिया के इस रंग मंच पर
कौन सा दिन आखिरी है।
परंतु मृत्यु को प्राप्त होने से पूर्व
हमारी भी तमन्ना है,
देखना है उस पर का जीवन
कितना सहज अफसाना है।
सुनो खोल दो ना यह बेड़ियां,
जो है समाज की सीमा की कड़ियां।
छोड़ दो अब जान भी दो।।

12. चलो गगन के तारे चुने

चलो गगन में तारे चुनने,
उसे चमकती तारों से धारा सजाने
और स्वयं सवरने।।
चलो गगन में तारे चुनने,
चुनेंगे वही तारे जो होंगे,
अद्वितीय सितारे।।
उनके अनोखे प्रकाश से
अपना राष्ट्रीय खजाना भरने।
चलो गगन में तारे चुनने।।
चांद को लेकर आएंगे,
देश की बालकनी को सजाएंगे।
सूरज भी लेकर आएंगे,
चारों ओर प्रकाश फैलाएंगे।
ना होगा अंधेरा किसी मन में
चलो गगन में तारे चुनने।
रंग-बिरंगे तारों को छत पर स्थान देंगे,
शीर्ष पर होंगे बड़े सितारे,
कुछ को स्टार कहेंगे,
कुछ को अपना साथी बुलाएंगे।
हर रात में चांदनी भरने,

चलो गगन में तारे चुनने,
उसे चमकते तारों से धरा सजाने,
और स्वयं सवरने।।

13. चल उठ विजय टंकार भर

चल उठ विजय टंकार भर,
अपना स्वरूप का विस्तार कर,
अपने कर्तव्य को स्वीकार कर,
स्वयं को तैयार कर,
दिलों में जलाकर मसाल
यार कर ।
अब यार कर।।
निकल अपनी बाण तूणीर से,
बाणों की बात कर समीर से ,
अमर इतिहास लिख रुधिर से ,
अपनी बाहुबल से धरा का सिंगार कर
चल उठ विजय टंकार भर।।
चल चल और बस चला जा,
ना रुक किसी वजह,
वरना रुकने की मिलेगी सजा,
नहीं मिल पाएगा जीवन में रास और मजा।
इसलिए अपने लक्ष्य को अंगीकार कर ,
चल उठ विजय टंकार भर।।
खोज नए पथ जबाने के
चल पड़ उस पर परवाने से

ना चूक किसी बहाने से,

ना बहक किसी के बहकाने से,

इन बातों को जीवन में उतारकर

अपनी कर्तव्य पथ पर आगे बढ़।

चल उठ विजय टंकार भर।

अपने स्वरूप का विस्तार कर,

अपनी कर्तव्य को स्वीकार कर,

स्वयं को तैयार कर,

दिलों में जलकर मसाल

यार कर ।

अब यार कर।।

14. युवाओं: से सवाल

सुन! युवा वर्ग एक बात बता,
क्या सिर्फ सोने में है मजा?
क्या सिर्फ फोन चलाने में है मजा?
या रिंगटोन बजाने में है मजा ,
या फिर बिना कर्म किए खाने में है मजा?
मेरे इन्हीं प्रश्नों का उत्तर सजा
सुन !युवा वर्ग एक बात बता।।
क्यों दूर भागते हो जिम्मेदारियां उठाने से?
क्यों रुकते हो बेवजा बहाने से?
क्यों घबराते हो स्वयं को तपाने से?
क्यों शर्माते हो जमाने की सामने आने से?
क्यों बिताते हो समय को दफन पड़े खजाने से?
क्यों नहीं समझने समझाने से?
मेरी इन्हीं प्रश्नों पर अपना विचार बता।
सुन युवा वर्ग एक बात बता।
क्यों छोड़ रहे हो उसे,
जो हमारी संस्कृति की पहचान है?
क्यों तोड़ रहे हो उसे,
जो हमारे पूर्वजों की मशाल है?
क्यों फैला रहे हो उसे,

जो अनभिज्ञता का जाल है?
क्यों सुला रहे हो उसे,
जागन जिसका काम है?
तेरी आदत तो शायद
कमाल है, कमाल है।
क्या खोया ,क्या पाया तुमने,
यह नहीं पूछता मैं,
परंतु यह तो मुझे जरूर बता,
क्या मिटा दी तुमने हमारे
पूर्वजों की सुरता, विशालता, प्रचुरता,
अखंडता, अमितता, एक धागे की सूत्रता?
क्या यही है तेरी कर्मठता,
तुम्हारा विवेक,
और तुम्हारी सूझबूझता ?

15. युवा: कुछ खोया, कुछ पाया है

कुछ खोया, कुछ पाया है
पर क्या,
यह अब तक समझ नहीं आया है।
ऐसा लग रहा है इन आंकड़ों में
कोई घुमिल साया है।
और मेरा दिल इसे समझने लायक
विकसित नहीं हो पाया है।
इसलिए तो अब तक मैंने यह नहीं समझा,
की क्या खोया, क्या पाया है?
बचपन खो दिए मैंने,
अब जवानी का रंग आया है।
मां का गोद छुटा,
कर्तव्य और जिम्मेदारियां ने
मुझे तड़पाया है।
पिता की उंगली छोड़,
हाथों में कलम पकड़ाया है।
परिवार के सुख चैन को छोड़कर,
संघर्षों को गले लगाया है।
इसलिए सहसा दिल से आवाज निकली,
कि कुछ खोया, कुछ पाया है।

पर क्या,
यह अब तक समझ नहीं आया है।
बिना सोचे समझे कार्य करना छुटा,
अब हर कर्म का उद्देश्य है।
मट्टी के बने खिलौने छुटे,
पुस्तक व कार्य हाथों में आया है।
कहानी जो सुना करते थे पहले,
उस स्थान पर उपदेश सभी ने सुनाया है।
बिखेर दिया करते थे पहले
वह आज हमने ही सजाया है।
यह शायद इसलिए हुआ है,
क्योंकि अब हमारा,
युवा अवस्था आया है।
जिसमें हमने बाहुबली, समझदारी
एवं जिम्मेदारियां को पाया है।।

16. युवा:प्रेमी युगलों का जाल

हे राष्ट्र में कर्णधार,
हे देश की भविष्य के जीर्णोद्धार ,
हे कौम की ताकत,
हे राज्य की कर्मों की आहट।
तू फंसा है किस प्रेमी युगलो की जाल ।।
देख कौम में कितनी दर्दनाक ,
घटनाएं घट रही है हजार।
ऐसी स्थिति में तू सिर्फ अपने
प्रेमी से कैसे कर सकता है प्यार।
उसमें भी जब देश कर रहा हो,
तेरे प्यार और देखभाल का इंतजार।
और तू फंसा है किसी प्रेमी युगलो के जाल।।
बाहर निकाल वहां से और देख,
समाज का सारा सिस्टम बिगड़ रहा है।
शिक्षा से लेकर राजनीति तक,
सब में भ्रष्टाचार बढ़ रहा है।
खेलकूद जो शरीर का व्यायाम है,
वहां भी पैसा दौड़ रहा है।
मंदिर, मस्जिद जहां से
आत्मा को शांति मिलती है।

वहां से भी समाज में विविधता
और भेदभाव फैल रहा है।
सकारात्मक फैलाना है जिसका काम,
वह भी समाज में नकारात्मकता,अशांति,
दर्द और द्वेष बाटा जा रहा है।
इतना सब गलत हो रहा है,
और तू एकल की ओट में
समय काटा जा रहा है।
देख समाज की नाव फ़सी है मझधार,
और तू फंसा है प्रेमी युगलो के बाजार।
वहां से जरा बाहर तो निकल,
यहां भी तुझे मिलेगी खुशियां हजार।
साथ ही तेरे कर्मों से होगा,
हर नकारात्मक का संहार।
हे देश के आगामी जीर्णोद्धार।।

17.जीवन के युवावस्था का सांझ

कल का सोच खो दिया मैंने अपना आज,
पाया तो कुछ नहीं,
पर जीवन से चला गया वह सांझ।
जो दे सकता था मुझे अनमोल ज्ञान,
दे सकता था सीखने का तजुर्बा,
कुछ कृत्य करता मैं ,
थोड़ी खुशियां बांटता मैं,
कुछ चाहत भी दिल में आया होता शायद,
गलतियां कर कुछ नया सीखने का करता प्रयास।
परंतु कल का सोच,
खो दिया मैंने अपना आज।।
उस पल शायद नए विचार आए होते,
जो समाज के हित में होते।
नया मुकाम बनाया होता मैने,
अपनी पहचान के नए अक्षर जुटाया होता मैने।
खेला होता अपनों के साथ,
किया होता उन्हें प्रसन्न,
पाया होता उनसे प्यार।
तंतु कल का सोच,
खो दिया मैंने अपना आज।।

बहुत आज यूं ही खोया मैंने,
अब बचा है केवल सांझ।
दिल ने मुझसे अब आस लगाया है,
कि सफल करेगा तू आगे का सारे आज,
बनाएगा हर दिन को खास,
खिलाएगा हर दिन फूल नए
महकाएगा हर जीवन का श्वास।
क्योंकि अब सारे आज
होंगे बेहद खास।
नहीं बीतेगा अब से कोई ऐसा आज,
जिसमें रहेगा केवल कल पर विश्वास।।

18. खुद को खोकर, खुद को पाया

खुद को खोकर, खुद को पाया।
बड़ी मुश्किल से खोने को भुलाया,
बड़ी मुश्किल से पाने को संभाल पाया।
खुद को खोकर, खुद को पाया।
जवानी के रंग पाने के लिए,
बचपन के तितली तितली उड़ाया।
खेलकूद बेफिक्रिया छुट्टी
जिम्मेदारियां मैंने पाया।
मन भागा बचपन की ओर,
पर मैं चाह कर भी नहीं जा पाया।
खुद को खोकर, खुद को पाया।
बचपन में जिनसे हाथ जुड़े थे मेरे,
जवानी में भी उनका ही साथ पाया।
स्थितियां बदल गई हैं,
इसलिए उनका भी अलग ख्याल है,
जिनके बीच हिम्मत करके संतुलन बनाया।
खुद को खोकर, खुद को पाया।
ख्वाब जरुर बदलेंगे हकीकत में
क्योंकि बस यही तो साथी है।
यही तो अंतरंग है इस रीति के

यही दिल को समझाया।

खुद को खोकर खुद को पाया।

खुद को खोकर, खुद को पाया ।

बड़ी मुश्किल से खोने को भुलाया,

बड़ी मुश्किल से पाने को संभाल पाया।

खुद को खोकर, खुद को पाया।

19. जीवन की अलबेली रूपरेखा

जीवन की अलबेली रूपरेखा को
हमने देखा और परखा है।
क्या कहे सिंगार के इसके,
जैसे हवा का झोंका है।
कभी मंद मंद कभी तेज गमन।
कभी गर्म गर्म, कभी शीतलन।
कभी जोश में तेज बहना।
कभी मायूस सा स्थिर रहना।
के दफा गोल गोल बेचैन सा,
कभी गम के बदले सहने वाला,
कभी उन्नति देने वाला,
कभी हताश कर देने वाला,
इन सबके बीच इन हवाओं ने,
गम के बादल का सीना चीरा है।
अरमानों की पंख लिए,
जैसे गगन में उड़ने वाला।
वास्तव में
जीवन की अलबेली रूपरेखा को,
हमने देखा और परखा है।
क्या कहे सिंगार के इसका,
जैसे हवा का झोंका है ।।

20.शायद इसी का नाम जीवन है

क्या करूं, कैस करूं,
यही तो उलझन है,
शायद इसी का नाम जीवन है।
मुझे मुझको दिखा दे,
मन इसका नहीं दर्पण है।
मुझे मुझसे मिला दे,
ऐसा नहीं कोई जुड़न है।
सारे गिले शिकवे मिटा दे,
मुझे प्रसन्न कर दे,
ऐसा नहीं कोई यंत्रण है।
क्या करूं, कैसे करूं,
जो इसे जान गया,
वह समुद्र फान गया।
मेरा तो सारा समय गया।
समझ नहीं पा रहा हूं मैं,
कोई तो मुझे यह बता दे,
क्या करूं ,कैसे करूं।
जीवन की इन उलझन के बीच,
हर परिस्थितियों के अलग-अलग रंगहै
क्या करूं ?

कैसे करूं ?

यही तो उलझन है,

शायद इसी का नाम जीवन है।

21 सिर्फ हमारे शब्द बचेंगे

इस नश्वर दुनिया में,
सिर्फ हमारे स्वर बचेंगे।
कोई इसी से घायल करेगा हमें,
कुछ इसी से हमें याद करेंगे।
इस नश्वर दुनिया में,
सिर्फ हमारे शब्द बचेंगे।
पीढ़ियां पीढ़ियां बदलेगी,
सब अपने रंग में झूमेंगे।
कोई किसी से शायद बात नहीं करेगा,
परंतु बुलंद स्वर वे जरूर सुनेंगे।
इस नश्वर दुनिया में,
सिर्फ हमारे शब्द बचेंगे।
कोई इसी दम पर उड़ान भरेगा,
कुछ इसके कारण ही गिरेंगे।
कुछ के घाव पर इसी से मरहम लगेगा,
कुछ इसी के जरिए जख्म देंगे।
इस नश्वर दुनिया में,
सिर्फ हमारे शब्द बचेंगे।
किसी की अमर हो जाएंगे स्वर,
किसी के चंद धूमिल पड़ेंगे।

कुछ इसी के दम पर महल खड़ा करेगा,
जनसैलाब बटोरेगा, दिल को जीतेगा।
तो कुछ दिल को तोडेंगे।
इस नश्वर दुनिया में
सिर्फ हमारे शब्द बचेंगे।।

22. युवा: यह थकने कि तुम्हारी अवस्था नहीं

थक गए,
ये थकने कि तुम्हारी अवस्था नहीं,
अभी तुम्हारे शरीर में थमने की
भी कोई व्यवस्था नहीं।
ना तुम बच्चे हो, ना बूढ़े,
युवा तुम्हारी अवस्था है ,
बांधा विघ्नों से लड़ो
ऐसा तुम्हें बाहुबल और साहस
और ऐसी ही व्यवस्था है।
फिर क्यों थम गए,
यह थमने की तुम्हारी अवस्था नहीं।
मस्तिष्क को झूठ संदेश क्यों देते हो,
कि तुम्हारे अंग अंग में दर्द भर आया है।
स्वेटर पहनकर कार्य करना नहीं बनता
क्योंकि सर्दी आया है।
बारिश का मौसम है,
इसमें सोना ही मन भाया है।
गर्मी में पसीने बहुत आते हैं,
यह शरीर में मुझे बताया है।

मेहनत क्यों करना, मनुष्य का तो जीवन
मैं आराम फरमाने के लिए पाया है।
सारी ऋतु में मेहनत करना कष्टदाई है,
यह दिल को समझाया है।
मस्तिष्क को झूठा संदेश तुमने
न जाने कैसे दे पाया है?
तेरे निर्माता ने तुझे आराम
फरमाने के लिए बनाया है।
इसलिए कर्म कर और करता जा
यही सीखने के लिए,
गीता का पाठ पढ़ाया है।
इसलिए तो तुम्हें उत्तम संरचना व
मस्तिष्क दे उत्तम सलीके से सजाया है ।
तुम्हे यह क्यों नहीं समझ आया है?
और कहते हो थक गए।
यह थकने कि तुम्हारी अवस्था नहीं,
अभी तुम्हारे शरीर में,
थमने कि तुम्हारी अवस्था नहीं,
अभी तुम्हारे शरीर में,
थमने कि कोई व्यवस्था नहीं।
ना तुम बच्चे हो ना बूढ़े,
युवा तुम्हारी अवस्था है

23. युवाः तेरी शक्ति अथाह

तेरी शक्ति अथाह,
तुझेमें ऊर्जा अपार,
युवा हो गए हो अब आप
बस आपको आपकी शक्ति से परिचित करा दें,
ऐसे जामवंत का है इंतजार।
जो बता दे आपको
कि आप ऊर्जा के स्वरूप हो।
जीवन का अंधेरा
मिटा दें ऐसे धूप हो।
बहुत तेज है तुममें,
राष्ट्र के प्रतीक हो।
तेरे एक रूप का स्वरूप हजार,
तेरी शक्ति अथाह,
तुझमें ऊर्जा आपार,
युवा हो गए हो अब आप,
बस आपको आपकी शक्ति से परिचित करा दे,
ऐसे जामवंत का है इंतजार।
हनुमान हो आप इस राष्ट्र के,
राम की ताकत हो।
मस्तिष्क में ऐसी व्यवस्था है,

की हर कार्य में पारंगत हो।
परिस्थितियों के अनुसार हिमालय
उठाकर उड़ सकते हो।
दुराचारियों से लड़ सकते हो ।
राष्ट्र का भाग्य बदल सकते हो।
तुम ही तो हो आवाम के कर्णधार
तेरी शक्ति अथाह,
तुझ में ऊर्जा अपार,
बस आपको आपकी शक्ति से परिचित करा दें,
ऐसे जामवंत का है इंतजार।।

24. आगे बढ़ते जाना है

अपनी नई सोच के साथ हम मेले में चले,
परंतु अपने विचार के साथ
हम स्वयं को अकेले ही मिले।
परंतु कोई नहीं,
'एकला चलो 'टैगोर ने यह कहा है।
कुछ नया करने के लिए बहुतों दर्द सहा है।
तो क्यों सोचूं की कोई हमारा साथ निभाएगा,
मकसद अच्छा होगा तो यह दुनिया पीछे आएगी।
अपने विचार जन-जन तक पहुंचाएंगे,
चारों ओर हरियाली छाएगी।
नए समाज का आगाज होगा,
हमारे विचारों को दुनिया गले लगाएगी।
निराश नहीं होना कदम बढ़ाते जाना है,
नया सीखने के क्रम में स्वयं को आजमाना है ।
हमारे जीवन का लक्ष्य
अपना मुकाम पाना एवं नए राष्ट्र बने हैं।

25. शिक्षा

शिक्षा महज किताबी ज्ञान नहीं,
क्यों इसका सबको भान नहीं,
केवल किताबी ज्ञान रखना,
शिक्षित का प्रमाण नहीं।
फिर क्यों रटते रटते रहो,
यह बात हम बच्चों से रहते हो
रचनात्मक जो जीवन की वास्तविकता है,
उससे दूर रखते हो।
क्यों हमारा बोझ बढ़ाते हो,
स्पेलिंग रटवाते हो।
जहां जाओ वहां बस,
इंग्लिश इंग्लिश चिल्लाते हो।
मातृभाषा में बात करने पर
हमें लज्जित करवाते हो।
क्यों दो-चार सिर्फ तथ्य बात कर,
झूठा शान दिखाते हो।
अरे !शिक्षा ऐसे दो
कि हम क्रिएटर बने,
अपनी बिजली स्वयं उत्पन्न
करने वाले जनरेटर बने।

शिक्षा अर्थात संस्कार युक्त का ज्ञान पाकर,
अगली कड़ी के स्वेटर बुने।
आसमान में स्वतंत्र घूम के,
अपने तारे स्वयं चुने।
अरे ! तालीम ऐसी दो,
की गरज उठे, दहाड़ उठे,
जब हम बोले तो कंपन हो,
सुनने वालों में झंकार उठे।
आत्मविश्वास से भरे रहे,
कर्तव्य पथ पर अड़े रहे,
परिस्थितियों के अनुसार विनम्र रहे,
जरूरत पड़े तो गर्म रहे,
सिर्फ किताब ज्ञान पाकर,
मियू मियू ना बने रहे।।

26.मेरा नाज, मेरा वतन

ए वतन मेरा नाज है तू,
मेरा फक्र है तू ,
मेरा गर्व है तू,
मेरा स्वाभिमान, अभिमान है तू,
राष्ट्र के अतिरिक्त
सभी रिश्तों सा व्यहार है तू,
मेरा प्यार है तू।।
तूने अपने सारे फर्ज निभाएं,
अब हमारी निभाने की बारी है,
अब तक संभाल तुमने हमें,
भारतीय होने का पहचान दिया हमें,
अब तुम्हारा मान बढ़ाने की
हमारी पारी है।
तुम्हारी बुलंद आवाज बनेंगे हम,
तुम्हारे सिर पर सुशोभित,
सरताज बनेंगे हम।
तुम्हारी ताकत बनेंगे हम,
तुम्हारी चाहत बनेंगे हम,
विश्व मंच पर तुम्हारे,
कदमों की आहट बनेंगे हम।।

तुम्हारी सांस बनेंगे हम,
तुम्हारी आश बनेंगे हम,
कभी नहीं वह टूटने वाला
विश्वास बनेंगे हम।
तेरे मंद मंद मुस्कान का,
साक्षी बनेंगे हम।
तुम्हारी पहचान बनेंगे हम,
तुम्हारा चांद बनेंगे हम,
तुम्हारी बुलंदी तथा आनंद का
राज बनेंगे हम।
तुम्हारे भविष्य का स्वर्ण
इतिहास बनेंगे हम।।

27.फिर तू देख, मिल जाए रब

बहुत सोया, चल जाग अब,
खोल आंख चल ताक अब।
नजरअंदाज की बहुत समझ ले अब,
पाया बहुत पर त्याग अब,
फिर तू देख मिल जाए रब।
तेरे दिल में बस एक ही
अरमान होनी चाहिए।
मिले सब पर देने की
चाह होनी चाहिए।
लकीरों को मोड,
किस्मत से लड़,
लड़ता रह तू उम्र भर,
फिर होके बावला
मेहनत कर लक्ष्य पर,
फिर तू देख मिल जाए रब।
क्यों फंसा है रे परिंदे,
बेतुकियों के जाल में,
क्यों छुपा है रे परिंदे,
ताश की आशियाने के ढाल में।
क्यों देखा नहीं रे बंदे,

महलों से झांक कर।

क्यों देखा नहीं लालिमा को,

सुबह जल्दी जाग कर।

तू कर्म कर और करता जा,

मत रुक भाग्य पर,

फिर तू देख, मिल जाए रब।।

28. मानव का झूठा भ्रम

ये भ्रम है मानव का,
जो थोड़ा पाकर इठलाता है।
और ढोंग ऐसा करता है,
जैसे वही विधाता है।
स्वयं को ऊंचा बताकर,
निचले को अपना शान दिखाता है,
अभिमानी बनकर अपना घमंड दिखाता है,
ये कैसा भ्रम है मानव का ,
जो थोड़ा पाकर इठलता है।
भेष का परिवेश बनता है
पत्तों का महल उठता है,
मन से काल्पनिक दुनिया का निर्माण कर,
उसमें शोर मचाता है।
वास्तव में क्या चल रहा है,
यह वह नहीं जान पाता है।
यह भ्रम है मानव का,
जो थोड़ा पाकर इठलता है।
आईना जो उसका स्वरूप दिखता है,
पर उसमें भी वह केवल
अपनी शक्ल को ही देख पता है।

मन का अंधा वह जीव
दूसरों को आंखों से डराता है।
अमीर नहीं वह हृदय से,
परंतु वस्तुओं का महंगा दाम गिनवाता है।
हृदय से शुद्ध नहीं वह आत्मा,
पर मंदिरों में कर्मकांड करवाता है।
यह कैसा भ्रम है मानव का,
जो थोड़ा पाकर इठलता है।
अब कौन बताएं इनको
तू तो टुकड़ों के टुकड़े का भी आधा है।
यह कैसा भ्रम है मानव का,
जो थोड़ा पाकर इठलता है।
और ढोंग ऐसा करता है,
जैसे वह विधाता है।।

29. समय का पहिया चलता जाता है

समय का पहिया चलता जाता है ,
ना कोई उसे रोक पाता है।
अचंभे वाली बात सुनो,
वह स्वयं को फिर नहीं दोहराता है।
समय का पहिया बस चलता ही जाता है।।
यह सभी के झोली में,
पूर्व से निश्चित करके आता है।
आज से शुरू हुआ हूं मैं,
पर अपना अंत नहीं बतलाता है।
कितने पल शेष है तेरे जीवन में,
यह नहीं गिनवाता है।
समय का पहिया बस चलता ही जाता है।।
लाखों आए टाइम मशीन बनाने वाले,
पर यह किसी के मुट्ठी में ना समाता है।
क्रमिक रूप से हमारी अवस्था,
इसके साथ ढल जाता है।
भले बुरे या अमीर गरीब यह,
किसी से एक इंच भी टकसाया ना जाता है।
समय का पहिया बस चलता ही जाता है।।
चलते रहने की अपनी प्रवृत्ति से

हमें यही पाठ पढ़ाता है,
रुको नहीं हमेशा चलते रहो
जिसके लिए तुम रुकते हो,
उनसे तुम्हारा कोई नहीं नाता है,
जो तुम्हें मेरे साथ चलाएं
वही तेरा अपना, वही तेरा विधाता है।
समय का पहिया बस चला जाता है।

30. जैसे कर्म वैसे कर्मफल

जैसे संगत, वैसे रंगत हो जाती है।

जैसा सोच, वैसे दुनिया सज जाती है।

जैसा भाव, वैसे स्वभाव हो जाता है।

जैसे चाह, वैसे विषय मिल जाता है।

जैसे कर्म हो वैसे कर्मफल जाता है।

जैसे ख्वाइशे , वैसे फरमाइशें ही जाती है।

मन ऐसा रचनाकार है,

जो पल भर में,

इच्छाओं की इमारत उठा देता है।

जैसा आप सपना देखते हो,

वैसा संसार दिख जाता है।

जैसी कल्पना करते हो,

वैसा चरित्र दिखा देता है।

अच्छे बुरे के ज्ञान से परे,

बस मंजिल सज जाती है।

जैसी संगत,वैसी रंगत हो जाती है।

जैसा सोच, वैसे दुनिया सज जाती है।

इसलिए रुको और विचार करो,

सोच समझ कर कल्पना तैयार करो।

जो हित में हो उसे पर अडिग रहकर

मन को आदेशित करो,

तब वह सर्वहितकारी हो जाता है।

जैसी ख्वाहिश है वैसी फरमाइशें हो जाती है।

जैसा सोच, वैसी दुनिया सज जाती है।

31.खुदरत की चाल

बस खुदरत की ऐसी जाल है,
जहां मेरी न मजाल है।
चाह दे जो वह कहीं
हो जाता है वही सही।
क्योंकि खुदरत की ऐसी चाल है,
जहां मेरी ना मजाल है।
लाख में प्रयास करूं,
योजनाओं को गूथू बनू,
सास भरूं, आश करूं,
अथक प्रयास करूं।
पर उसकी मर्जी के आगे
मैं नतमस्तक हूं ।
क्योंकि बस खुदरत की ऐसी जाल है ,
जहां मेरी मजाल है
परंतु अपने कर्म को पूरा करने हेतु
मैं भी थोड़ा हट्टी हूं।।
परंतु आपके समक्ष अति सूक्ष्म हूं।।

32. लोहा लो संघर्ष करो

दुनिया के इस भीड़ में
चले हम निखरने को।
लोहा लो, संघर्ष करो
इस विचार को विश्व में बिखरने को।
पहचानी राहों पर चलकर,
न होता कुछ हासिल।
इसलिए अनजानी राहों पर चलकर
नया अविष्कार करने को।
स्वाति बनी इस दुनिया में,
निस्वार्थ भाव भरने को
सुस्त पड़े मानव हृदय में,
पुनः क्रांति भरने को।
दुनिया के इस भीड़ में ,
चले हैं हम निखरने को।
क्या हुआ इन लोगों को
जो नया करने से डरते है।
पहचानी राहों पर चलकर
स्वयं को चमकाया करते हैं।
आप ही जरा हमें बता दो
क्या हुआ होता इतना उत्थान

जब सभी डरे होते
इसलिए हम भी चले हैं,
नया अविष्कार करने को।
दुनिया के इस भीड़ में
चले हैं हम निखरने को
लोहा लो, संघर्ष करो,
इस विचार को विश्व में बिखरने को।।

33.जिंदगी के सफर में

जिंदगी के सफर में आयाम बहुत है,

व्यवहार बहुत है,

त्योहार बहुत है,

अरमान बहुत है,

ख्वाहिश बहुत है,

फरमाइश बहुत है ,

प्रेम बहुत है ,

ख्वाब बहुत है ,

राज बहुत है ,

प्यास बहुत है,

दरिया बहुत है ,

स्वर बहुत है,

लय बहुत है,

विचार बहुत है,

भाव बहुत है,

गहराईयां बहुत है ,

विभिन्न रंगों के आसमान बहुत है,

प्रभाव बहुत है ,

अभाव बहुत है,

छांव बहुत है,

ठहराव बहुत है,
परंतु ठहर न जाना ,मेरे दोस्त!
आयाम के मध्य,
क्योंकि राष्ट्र, समाज, पूर्वज,
अग्रज और सभी की
आशाएं उम्मीदें भी बहुत हैं।।

34.चलो आज नई शुरुआत करें

कल एक सुबह की रात हुई,
चलो आज नई शुरुआत करें।
यह समय तो बिताता जाएगा,
इसकी सिख को आत्मसात करें ।
फिर से आज एक सफर की रात हो गई,
कल अर्थात आने वाले आज में
नए सफर का आगाज करें।
कल एक सुबह की रात हुई,
चलो आज नहीं शुरुआत करें।
कर्मों के पन्ने सुनहरे हैं,
राहों के संघर्ष है मीठी,
कर्तव्य पथ पर थोड़े कांटे हैं ।
परीक्षाओं के लगे हैं बगीचे,
इस सफर में साहस,
धैर्य व कौशल से मुलाकात हुई।
कल एक सुबह की रात हुई,
चलो आज नई शुरुआत करें।।

35.चलो भारत का नवनिर्माण करें

चलो भारत का नवनिर्माण करें,
पूर्वजों के सपने को साकार करें।
थोड़ा अपना रस भी घोले,
धरा का अद्वितीय श्रृंगार करें।
प्राकृतिक की बगिया से
फूल चुन चुन कर लाएं।
जो हो अनुपम व
अन्य की पहुंच के परे।
चलो भारत का नवनिर्माण करें।।
राष्ट्र का चतुर्मुखी विकास करें,
सरदार के देश का एकाकार करें,
जिसमें सब भारतीय हो,
राज्य के नाम पर ना बटे रहे।
अंबेडकर के लोकतंत्र को सुदृढ़ करें,
जिसमें सबको मौलिक अधिकार मिले।
नेताजी के सपनों का भारत बने,
जहां हर दिल में समर्पण का भाव जगे।
भगत सिंह सा युवा हो हर,
जो राष्ट्र के खातिर जिए मरे।
गुरु गोविंद सिंह सा तेज हो सभी में ,

बच्चा बच्चा उनके शहजादे जैसा बने।
भरत सा कलेजा हो सभी में,
जो सिंहो का दांत गिने।
चलो भारत का नवनिर्माण करें।
अपनी अनमोल शिक्षा पद्धति को लागू करें,
अपनी संस्कृति को पुनः अंगीकार करें।
नशा शराब का नहीं, सोमरस का हो,
जिसका देव भी रसपान करें।
चलो इस युग का भी अपना पुस्तक लिखें,
उसके ज्ञान को हर घर बिखेरे,
जिससे उत्तम साक्षी चक्षु मिले
सभी को, सभी कर्मयोगी बने।
अब रूको नहीं, आगे बढ़ो।
चलो अपनी कर्मभूमि को स्वयं तैयार करें।
चलो भारत का नवनिर्माण करें।।